

वैकल्पिक वषिय कैसे चुनें?

संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) द्वारा आयोजित सविलि सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिये अभ्यर्थियों को इसके प्रत्येक चरण (प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार) के लिये अलग-अलग रणनीति बनानी पड़ती है। साथ ही, उन्हें एक व्यापक रणनीति ऐसी भी बनानी होती है जो इन सारी रणनीतियों के बीच समुचित समन्वय स्थापित कर सके। नए अभ्यर्थियों (विशेषकर हिंदी माध्यम) को यह सवाल हमेशा परेशान करता रहता है कि आखिर सटीक रणनीति का मतलब क्या है? उन्हें ऐसा क्या करना चाहिये कि उनकी रणनीति परीक्षा के सभी स्तरों पर उचित साबित हो। अगर आप इस कठिन परीक्षा के क्षेत्र में उतर गए हैं तो इसके विभिन्न पहलुओं को पूरी गहराई से समझ लें। इस परीक्षा की तैयारी के दौरान आपके द्वारा लिया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण नरिणय मुख्य परीक्षा के एक विशेष पक्ष से संबंधित है और वह यह है कि उम्मीदवार को वैकल्पिक वषिय का चयन कनि कसौटियों के आधार पर करना चाहिये? यह इस परीक्षा की तैयारी के दौरान लिया जाने वाला सबसे कठिन नरिणय होता है और यह नरिणय इतना महत्वपूर्ण है कि प्रायः इसी से आपकी सफलता या विफलता तय हो जाती है। अतः यह ज़रूरी है कि भावुकता पर आधारित नरिणय न लेते हुए आप वैकल्पिक वषिय के रणनीतिक महत्त्व को समझें।

वैकल्पिक वषिय का महत्त्व

- यह कहना पूर्णतः सही नहीं है कि सामान्य अध्ययन 1000 अंकों का है और वैकल्पिक वषिय सरिफ 500 अंकों का, इसलिये अभ्यर्थियों को सामान्य अध्ययन पर ज़्यादा बल देना चाहिये। ऐसा कहने वाले शायद वैकल्पिक वषिय के रणनीतिक महत्त्व को नहीं समझते।
- इस परीक्षा में यह बात बलिकूल मानने नहीं रखती कि किसी अभ्यर्थी को कतिने अंक हासलि हुए हैं। महत्त्व सरिफ इस बात का है कि किसी उम्मीदवार को अन्य प्रतस्पर्द्धियों की तुलना में कतिने कम या अधिक अंक प्राप्त हुए हैं।
- वगित कुछ वर्षों के परीक्षा परिणामों पर नज़र डालें तो आप पाएंगे कि हिंदी माध्यम के लगभग सभी गंभीर अभ्यर्थियों को सामान्य अध्ययन में 325-350 अंक प्राप्त हुए (2014 की सविलि सेवा परीक्षा में नशिांत जैन ने एक अपवाद के रूप में 378 अंक प्राप्त किये थे)। इसके विपरीत, अंगरेज़ी माध्यम के गंभीर अभ्यर्थियों को इसमें औसत रूप से 20-30 अंक अधिक हासलि हुए, जबकि वैकल्पिक वषिय में लगभग सभी गंभीर अभ्यर्थियों को 270-325 अंक हासलि हुए। इस औसत से वैकल्पिक वषिय का महत्त्व अपने आप स्पष्ट हो जाता है। ध्यान रहे किये लाभ आपको तभी मलि सकता है जब आपने वैकल्पिक वषिय का चयन बहुत सोच-समझकर कयिा हो।
- भले ही वैकल्पिक वषिय सरिफ 500 अंकों का होता हो कति गलत वैकल्पिक वषिय चुनने से आप लगभग 100 अंकों की नकारात्मक स्थिति में जा सकते हैं। इतना नुकसान तो अभ्यर्थी को 1000 अंकों के सामान्य अध्ययन में भी नहीं उठाना पड़ता।
- इस स्थिति को देखते हुए हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों के लिये समुचित रणनीति यही बनती है कि अगर सामान्य अध्ययन में उन्हें कुछ तुलनात्मक नुकसान होता है तो उन्हें अन्य क्षेत्रों में इस नुकसान की भरपाई या उससे ज़्यादा लाभ हासलि करने की कोशिश करनी चाहिये।
- ऐसे क्षेत्र दो ही हैं- नबिंध और वैकल्पिक वषिय। नबिंध का हल हमारी इच्छा पर नरिभर नहीं होता, वह सभी के लिये अनविरय है। किसी भी माध्यम के उम्मीदवारों को समान वषियों पर ही नबिंध लिखना होता है। कति वैकल्पिक वषिय का चयन हमें करना होता है और अगर हमारा चयन गलत हो जाता है तो पूरी संभावना बनती है कि सरिफ एक गलत नरिणय के कारण हमारी सारी तैयारी व्यर्थ हो जाए।
- हिंदी माध्यम के उम्मीदवार उन्ही वषियों या प्रश्नपत्रों में अच्छे अंक (यानी अंगरेज़ी माध्यम के गंभीर उम्मीदवारों के बराबर या उनसे अधिक अंक) ला सकते हैं जनिमें तकनीकी शब्दावली का प्रयोग कम या नहीं होता हो, अद्यतन (Updated) जानकारियों की अधिक अपेक्षा न रहती हो और जनि वषियों पर पुस्तकें और परीक्षक हिंदी में सहजता से उपलब्ध हों।

वषिय का चयन क्यों कठिन है?

- कुछ लोगों का मानना है कि यू.पी.एस.सी. द्वारा नरिधारित सूची में से उम्मीदवार को अपनी रुचि के अनुसार कोई भी एक वषिय चुन लेना चाहिये इसके लिये किसी अन्य पक्ष पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है। वषिय चयन का यह सबसे गलत तरीका है।
- अपनी रुचि या सुविधा से कोई भी वषिय चुन लेने का तर्क वहाँ काम करता है जहाँ परीक्षा की प्रणाली सभी वषियों को बराबर स्तर पर रखती हो।
- सभी वषियों को बराबर स्तर पर रखने का एक ही उपाय है कि आयोग द्वारा वषियों के बीच स्केलिंग की व्यवस्था की जाए अर्थात सभी वषियों के प्राप्तांकों को एक ही स्तर पर लाने की प्रक्रिया अपनाई जाए।
- दुर्भाग्य की बात है कि यू.पी.एस.सी. सविलि सेवा की मुख्य परीक्षा में विभिन्न वषियों के बीच स्केलिंग नहीं करती है। वह एक हल्की-फुल्की सी प्रक्रिया अपनाने का दावा करती है जसि मॉडरेशन कहा जाता है।
- मॉडरेशन में मोटे तौर पर देख लिया जाता है कि विभिन्न वषियों या विभिन्न परीक्षकों के अंक स्तरों में बहुत अधिक अंतराल तो नहीं है, कति पूरी वसतुनिषिठता के साथ स्केलिंग जैसा समतलीकरण नहीं कयिा जाता।
- चूँकि यू.पी.एस.सी. स्केलिंग की व्यवस्था नहीं करती है, इसका स्वाभाविक परिणाम है कि सभी वषियों का परिणाम एक जैसा नहीं होता है। हर समय कुछ वषिय सुपरहटि माने जाते हैं तो कुछ वषिय एकदम फ्लॉप। उम्मीदवार भी एकाध साल की तैयारी के बाद समझ जाते हैं कि वैकल्पिक वषियों के बराबर होने की बात सरिफ एक ढकोसला है। सच तो यह है कि कुछ वषिय ही सफलता के राजमार्ग हैं, जबकि बाकी वषियों के माध्यम से विफलता लगभग तय हो

जाती है।

- यह स्थिति आज भी बदस्तूर जारी है और हृदि माध्यम के उम्मीदवारों के लिये तो यह ज़्यादा बड़ा खतरा बनकर उपस्थित होती है। अंग्रेज़ी माध्यम में कम से कम 8-10 वषिय ऐसे हैं जिनमें अच्छे अंक लाए जा सकते हैं लेकिन हृदि माध्यम के साथ ऐसी स्थिति नहीं है।
- हृदि माध्यम के अधिकांश उम्मीदवार उन वषियों का चुनाव सफल उम्मीदवारों के अंक और रैंक देखकर कर लेते हैं कति उन्हें इस बात का आभास तक नहीं होता कि अच्छे अंक और अच्छे रैंक वाले वे सभी उम्मीदवार अंग्रेज़ी माध्यम के हैं।
- उन्हें यह समझने में लंबा समय लग जाता है कि एक वषिय जो अंग्रेज़ी माध्यम में सफलता की गारंटी बना हुआ है, वही हृदि माध्यम में वफिलता की गारंटी भी बन सकता है। जब तक उन्हें यह बात समझ में आती है, तब तक उनके अधिकांश प्रयास खत्म हो चुके होते हैं।

वषिय चयन की कसौटियाँ

- वैकल्पिक वषिय के चयन के संबंध में प्रायः कई कसौटियाँ कही-सुनी जाती हैं। बेहतर होगा कि हम उन सभी पर विचार करें और फरि तय करें कि कसि कसौटी का कतिना महत्त्व है?
- यहाँ हमारा सारा विचन हृदि माध्यम के परप्रेक्ष्य में होगा। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, अंग्रेज़ी माध्यम में कसि भी उम्मीदवार को यह समस्या कभी नहीं आती कि उसे उसके माध्यम का नुकसान झेलना पड़ेगा, कति हृदि तथा अन्य माध्यमों के उम्मीदवारों को यह संकट झेलना पड़ सकता है। इसलिये हम केवल उन्हीं वषियों को चुनने का रास्ता निकालेंगे जो हृदि माध्यम के अभ्यर्थियों को 270 से 325 के बीच अंक दिलाने में सक्षम हों।
- इसकी सामान्य कसौटी यही है कि जिन वषियों में करेंट अफेयर्स या तकनीकी शब्दावली की ज़्यादा भूमिका होती है, उनमें हृदि माध्यम का उम्मीदवार नुकसान में रहता है क्योंकि हृदि में उपलब्ध अखबार या जर्नल ऐसे सत्र के नहीं होते कि वे अंग्रेज़ी अखबारों या जर्नल्स की बराबरी कर सकें।
- इसी प्रकार, जो वषिय मूलतः अंग्रेज़ी में वकिसति हुए हैं और जिनके लिये समुचित शब्दावली अभी तक हृदि में वकिसति या प्रचलित नहीं हो सकी है, वे भी हृदि माध्यम के लिये नुकसानदायक सिद्ध होते हैं क्योंकि अनुवाद की भाषा में वह प्रभाव पैदा नहीं हो पाता जो मूल भाषा में होता है।
- यही कारण है कि हृदि माध्यम में हृदि साहित्य, इतिहास, दर्शनशास्त्र जैसे वषिय अत्यंत उपयोगी हैं क्योंकि एक तो इनमें भाषा का फरक नहीं पड़ता और दूसरे इनमें करेंट अफेयर्स की कोई भूमिका नहीं होती। इनके अलावा, भूगोल भी एक ऐसा वषिय है जो प्रायः अच्छे परिणाम देता है क्योंकि इसमें भी करेंट अफेयर्स की भूमिका नहीं के बराबर होती है, भले ही उसके कुछ हिस्से में तकनीकी शब्दावली का दबाव रहता हो, कति जो वषिय अत्यंत परिवर्तनशील या डायनमिक प्रकृति के हैं (जैसे लोक-प्रशासन, अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र), उनमें हृदि माध्यम के उम्मीदवार के लिये बराबरी के सत्र को छू पाना अत्यंत कठिन हो जाता है।
- ऐसा नहीं है कि इन वषियों में हृदि माध्यम का कोई उम्मीदवार सफल ही नहीं होता। कुछ उम्मीदवार सफल भी होते हैं कति उनमें से अधिकांश की सफलता का राज केवल वैकल्पिक वषिय में प्राप्त अंकों में नहि न होकर कहीं और छपा होता है। कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि वैकल्पिक वषिय ने राह अवरोध करने की पूरी कोशिश की हो कति बाकी कषेत्रों में असाधारण अंक आने के कारण कोई उम्मीदवार सफल हो गया हो और नए उम्मीदवारों में संदेश यही गया कि यह उम्मीदवार उस वषिय के कारण सफल हुआ है।
- यह भी सही है कि इन वषियों में कभी-कभी कुछ उम्मीदवार काफी अच्छे अंक ले आते हैं, कति ऐसे उम्मीदवारों का अनुपात इतना कम है कि उनका अनुकरण करना अपने ऊपर प्रयोग करने के समान है।

वषिय चयन का आधार

रोचकता:

- वषिय चयन का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार उम्मीदवार की उस वषिय के प्रतगिहरी रोचकता होनी चाहिये।
- यह बात ठीक भी है क्योंकि अगर हमारी कसि वषिय में रुचि होती है तो हम कम समय में अधिक पढ़ाई कर पाते हैं और हमारी समझ भी गहरी हो जाती है।
- रुचिकर वषिय पढ़ते हुए हम थकान की बजाय ऊर्जा और उत्साह का अनुभव करते हैं जो सामान्य अध्ययन आदिकी पढ़ाई में भी सहायक होता है।
- अगर वषिय हमारी रुचि के विरुद्ध हो तो उसे पढ़ना अपने आप में बोझ के समान हो जाता है। ऐसे बोझिल वषिय के साथ इतनी गंभीर प्रतियोगिता में उतरना अत्यंत कठिन हो जाता है।
- वषिय रोचक है या नहीं, इसका नरिण्य सामान्यतः व्यक्तनिष्ठ ही माना जाएगा क्योंकि कसि व्यक्तिको कोई वषिय पसंद आता है तो कसि को कोई और, तब भी यह ध्यान रखना चाहिये कि वषिय की रोचकता काफी हद तक इस बात पर भी नरिभर होती है कि उस वषिय में कतिनी रुचिकर पुस्तकें या कतिने अच्छे अध्यापक उपलब्ध हैं?
- कई बार ऐसा होता है कि कोई वषिय अपनी मूल प्रकृति में रोचक है कति अध्यापक में संप्रेषण कौशल की कमी तथा पुस्तकों की भाषा की असहजता के कारण वह लोगों को अरुचिकर लगने लगा हो।
- एक समस्या यह भी है कि वषिय रोचक है या नहीं, यह उसे पढ़कर ही जाना जा सकता है जबकि वषिय चुनते हुए हमें उसे पढ़ने से पहले ही उसकी रोचकता के संबंध में फैसला करना पड़ता है।

अधिक अंकों की संभावना:

- वषिय ऐसा होना चाहिये जसमें समान मेहनत के आधार पर अधिक अंकों की उम्मीद की जा सकती हो।
- यह ध्यान रखना चाहिये कि औसत अंकों का अनुमान करते हुए आप सिर्फ हृदि माध्यम के उम्मीदवारों के अंकों को ही आधार बनाएँ, अंग्रेज़ी माध्यम के अभ्यर्थियों के अंकों को नहीं।
- कौन सा वषिय अंकदायी है और कौन सा नहीं? इसके नरिधारण के लिये आप वगित 4-5 वर्षों के टॉप्स के वैकल्पिक वषियों के अंक ढूँढ लें जो आपको विभिन्न पत्रिकाओं में छपे साक्षात्कारों या इंटरनेट पर मलि जाएंगे।
- आपको जिन वषियों में 4-5 उम्मीदवारों के अंक पता लग जाएँ, तो आप उनका औसत निकाल लीजिये और मान लीजिये कि उस वषिय में गंभीर उम्मीदवारों

को औसतन उतने ही अंक मिलते हैं। बस यह ज़रूर ध्यान रखयिगा कजिनि टॉपर्स के अंकों को आप आधार बनाएँ, उनका परीक्षा का माध्यम हदि रहा हो।

पाठ्यक्रम का छोटा आकार:

- कई उम्मीदवार वषिय चयन में इस बात को अत्यधिक महत्त्व देते हैं ककिसि वषिय का पाठ्यक्रम अत्यंत छोटा है और कम से कम समय में पूरा कया जा सकता है।
- कुछ वषिय ऐसे हैं जनिहें 3-4 महीनों में ठीक से पढ़ा जा सकता है (जैसे हदि साहित्य, संस्कृत साहित्य, मैथिली साहित्य, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, लोक प्रशासन आदि), जबककुछ वषियों में यह अवध 5-7 महीने के आसपास की होती है (जैसे भूगोल, इतिहास तथा राजनीति विज्ञान)।

बहु-उपयोगिता:

- वषिय ऐसा होना चाहिये जो बहुउपयोगी हो अर्थात् सरिफ वैकल्पिक वषिय के स्तर पर सहायक होने की बजाय परीक्षार्थी को संपूर्ण परीक्षा में मदद करे।
- इस दृष्टि से वे वषिय ज़्यादा अच्छे माने जाते हैं जो सामान्य अध्ययन में व्यापक भूमिका नभाते हैं, जैसे- भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, लोक-प्रशासन तथा अर्थशास्त्र। कुछ हद तक इस सूची में समाजशास्त्र को भी शामिल कया जा सकता है।
- दर्शनशास्त्र के समर्थक कह सकते हैं कसामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्र-4 (एथिक्स) में उनके वषिय की प्रबल भूमिका है, पर सच यह है कउस प्रश्नपत्र में ऐसे तकनीकी प्रश्न पूछे ही नहीं जाते कदर्शनशास्त्र की पृष्ठभूमि होने से कोई वषिय बढ़त मलि जाती हो।
- अगर कोई वषिय नबिध या साक्षात्कार के लिये सहायक होता है तो उसे बेहतर माना जाता है। जो वषिय सामान्य अध्ययन की दृष्टि से बेहतर माने गए हैं (जैसे भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, लोक-प्रशासन तथा अर्थशास्त्र), वे नबिध में भी सहायक होते ही हैं। समाजशास्त्र भी नबिध की दृष्टि से सहायक वषिय है।
- साहित्य और दर्शन जैसे वषिय भी नबिध में काफी हद तक मददगार सदिध होते हैं, वषिषतः पहले नबिध में, जो कसिी अमूरत या कल्पना प्रधान वषिय पर पूछा जाता है।

स्थिरता:

- इसका अर्थ है कवषिय की वषिय-वस्तु अपनी प्रकृति में कतिनी स्थिर है अर्थात् समय के साथ परिवर्तति होती है या नहीं होती है।
- जैसा कऊपर बताया जा चुका है, हदि माध्यम या अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यमों में उन्ही वषियों का परणाम ज़्यादा अच्छा रहता है जनिमें परिवर्तनशीलता या गतिशीलता के तत्त्व कम या अनुपस्थिति होते हैं। इस दृष्टि से हदि (या कसिी भी भाषा का) साहित्य, इतिहास तथा दर्शनशास्त्र शानदार वषिय हैं कयोंकउनके उत्तर कभी नहीं बदलते। कबीर, अकबर या शंकराचार्य के संबंध में लिखते हुए आपको इस बात की परवाह करने की ज़रूरत नहीं है कपछिले एक वर्ष में इस संबंध में कोई नया विकास तो नहीं हो गया है। भूगोल के संबंध में भी यह बात बहुत हद तक लागू होती है, कयोंकउसके सैद्धांतिक पहलू बहुत कम परिवर्तति होते हैं।
- इन वषियों में ज़्यादा से ज़्यादा इतना ही होता है ककभी-कभी इनमें कोई नई वचिारधारा प्रभावी हो जाती है जसि उम्मीदवार को पढ़ना होता है, कति ऐसे बदलाव 10-20 वर्षों में एकाध बार होते हैं और प्रायः उम्मीदवार को अपनी तैयारी के कालखंड में इस परिवर्तन का भागी नहीं बनना पड़ता है। अर्थात् एक बार की गई तैयारी ही वर्ष-प्रति-वर्ष बनि कसिी बदलाव के उसका साथ देती है।
- इसके विपरीत, जो वषिय अपनी प्रकृति में अत्यंत परिवर्तनशील या डायनमिक हैं (जैसे- राजनीति विज्ञान, लोक-प्रशासन, समाजशास्त्र या अर्थशास्त्र), उनके उम्मीदवारों को लगातार इस बात के लिये सचेत रहना पड़ता है ककसिी टॉपिक के संबंध में कोई नया अनुसंधान हुआ है या नहीं? वभिन्न अखबारों और जर्नलों में नई-नई केस स्टडीज़ छपती रहती हैं और ये वषिय बदलते रहते हैं।
- इन डायनमिक वषियों में अच्छे अंक उन्ही उम्मीदवारों को मलि पाते हैं जो इन अद्यतन जानकारियों को बनि कसिी बखिराव के अपने उत्तरों में शामिल कर पाते हैं।
- यहाँ चुनौती इकहरी नहीं बल्कदोहरी है। पहली चुनौती इस प्रकार की जानकारियों को इकटठा करने की है कयोंकप्रायः ऐसी जानकारियाँ अंग्रेज़ी में ही उपलब्ध होती हैं। दूसरी चुनौती यह है कनिई जानकारियों को पुरानी वषिय-वस्तु के साथ इस तरह कैसे मलिया जाए कदिनों के बीच में कोई जोड़ नज़र न आए, दोनों मलिकर एक हो जाएँ।

पृष्ठभूमि:

- इसका तात्पर्य है कउम्मीदवार जसि वैकल्पिक वषिय को चुन रहा है, उसने उस वषिय का अध्ययन स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर पर कया हुआ है या नहीं?
- उम्मीदवार के लिये उस वषिय को तैयार करना ज़्यादा आसान होता है जसिमें उसने स्नातक या परवर्ती स्तर की पढ़ाई की है।
- इसके बावजूद यह जानना रोचक है कअधिकांश सफल उम्मीदवार उन वषियों से सफल होते हैं जनिमें उनकी पृष्ठभूमि नहीं होती।
- अगर आप कसिी भी वर्ष का परणाम देखें तो पाएंगे कसफल होने वाले उम्मीदवारों में इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों का अनुपात बहुत अधिक है लेकनि इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि से आए उम्मीदवारों में शायद एक-चौथाई भी ऐसे नहीं मलिंगे जनिहोंने अपनी पृष्ठभूमि के वषिय को ही वैकल्पिक वषिय के रूप में चुना हो। यही प्रवृत्ति अन्य पृष्ठभूमि के अभ्यर्थियों में भी दखिली है।
- इसका कारण यही है कसिविलि सेवा परीक्षा में सफलता की दृष्टि से सभी वषिय बराबर स्तर का नषिपादन नहीं करते।
- कई बार उम्मीदवारों को यह समझ में आ जाता है कवि अपने पृष्ठभूमि वाले वषिय में उतने अंक हासलि नहीं कर पाएंगे जतिने ककसिी दूसरे अंकदायी वषिय में सरिफ 3-4 महीने पढ़कर हासलि कर लेंगे।
- इसके बावजूद, यह तो मानना ही पड़ेगा कअगर उम्मीदवार का वैकल्पिक वषिय उसकी पृष्ठभूमि का ही वषिय है तो उसके लिये तैयारी की प्रक्रया काफी आसान हो जाती है।

अन्य कसौटियाँ:

- उपरोक्त प्रमुख कसौटियों के अलावा कुछ उम्मीदवार कुछ अन्य कसौटियों की चर्चा भी करते हैं जैसे-
 1. किसी वषिय में पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हैं या नहीं?
 2. उस वषिय में इस परीक्षा की तैयारी के लिये उपयुक्त मार्गदर्शन मलि सकेगा या नहीं?
 3. क्या उस वषिय की तैयारी उम्मीदवार अपने स्तर पर कर सकता है या मार्गदर्शन की आवश्यकता अनविद्यत: पड़ती है?

कसौटियों का तुलनात्मक महत्त्व

- सामान्यत: कोई भी वषिय ऐसा नहीं है जो सभी कसौटियों पर खरा उतरे और न ही कोई वषिय ऐसा है जो एक भी कसौटी पर खरा न उतरे। हर वषिय कुछ कसौटियों पर शानदार प्रतीत होता है तो कुछ दूसरी कसौटियों पर कमजोर साबित होता है।
- सही कसौटी तय करने का सीधा सा तरीका यही है कि हमें अपनी प्राथमिकताएँ ठीक से पता हों। अगर हमारी प्राथमिकता किसी भी तरह से इस परीक्षा में सफल होने की है तो हम इस बात पर ध्यान देंगे कि किस वषिय में अधिकतम कतिने अंक हासलि हो सकते हैं, और उसी वषिय को चुनेंगे जिसमें ज़्यादा से ज़्यादा अंक मलि सकें, चाहे उसे पढ़ने में समय कुछ ज़्यादा समय ही क्यों न लगे?
- नए उम्मीदवारों को हमारा सुझाव यही है कि वे वैकल्पिक वषिय चुनते समय सबसे पहले यही देखें कि उसमें कतिने अंक हासलि हो सकते हैं ?
- दूसरे क्रम पर यह कसौटी रखें कि वह वषिय सामान्य अध्ययन तथा नबिंध आदि में कतिनी मदद करता है? अगर दो वषिय बराबर अंकदायी हैं और उनमें से एक सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम से जुड़ता है जबकि दूसरा नहीं, तो नसिंसंदेह उसी वषिय को चुना जाना चाहिये जो सामान्य अध्ययन में सहायता करेगा।
- तीसरी कसौटी यह होनी चाहिये कि वषिय कतिना रोचक है? अगर दो वषिय बराबर अंकदायी हैं और दोनों सामान्य अध्ययन व नबिंध में बराबर सहायता पहुँचाते हैं तो नसिंसंदेह उन दोनों में से उसी वषिय को चुना जाना चाहिये जो उम्मीदवार को ज़्यादा रुचिकर लगता हो।
- अगर उम्मीदवार की रुचि किसी ऐसे वषिय में हो जो सफलता की दृष्टि से बेहद नकारात्मक माना जाता है तो बेहतर यही होगा कि उम्मीदवार 3-4 महीनों के लिये कड़वी दवाई की तरह उपयोगी वषिय का अध्ययन कर ले। सफलता मलिन के बाद वह जीवन भर अपनी रुचि के अनुकूल कार्य कर सकता है कति अगर सफलता नहीं मलि तो तय मानिये कि उसे अपने उसी प्रिय वषिय से नफरत हो जाएगी।

वभिन्न वषियों का मूल्यांकन

- हमारे मूल्यांकन के अनुसार वभिन्न वषियों को नमिनलखित सोपानक्रम में रखा जाना चाहिये-
 1. हदि साहित्य या किसी अन्य भाषा का साहित्य
 2. इतहास
 3. भूगोल
 4. दर्शनशास्त्र
- इन वषियों के अलावा हमने किसी अन्य वषिय को इस सूची में नहीं रखा है क्योंकि वे आमतौर पर इस पहली कसौटी पर ही खरे नहीं उतरते कि उनमें अभ्यर्थी को सफलता के लायक अंक मलि सकेंगे।
- उपरोक्त चार वषियों के अतिरिक्त किसी अन्य वषिय को लेकर कोई अभ्यर्थी सामान्यत: तभी सफल हो पाता है जब वह बाकी प्रश्नपत्रों (सामान्य अध्ययन, नबिंध तथा साक्षात्कार) में असाधारण अंक हासलि करे।
- हदि माध्यम के उम्मीदवारों को हमारी स्पष्ट सलाह है कि वे इन चार वषियों के अलावा किसी भी अन्य वषिय को लेने से बचें, चाहे उनकी उस वषिय में पृष्ठभूमि ही क्यों न रही हो।

हदि साहित्य (वैकल्पिक वषिय)

- हदि साहित्य नसिंसंदेह हदि माध्यम के उम्मीदवारों के लिये सर्वश्रेष्ठ वषिय है। इसका प्रमाण यह है कि विगत कुछ वर्षों के सविलि सेवा परीक्षा परणाम में हदि माध्यम के अधिकांश शुरुआती रैंक उन्ही उम्मीदवारों के हैं जिनके पास यह वषिय था।
- 2014 के हदि माध्यम के टॉपर नशिांत जैन को इस वषिय में 500 में से 313 अंक हासलि हुए थे, जो गणति के अलावा किसी भी अन्य वषिय की तुलना में सर्वाधिक अंक हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि नशिांत की अभूतपूर्व सफलता में हदि साहित्य की प्रबल भूमिका रही। हदि माध्यम से सफल हुए द्वितीय टॉपर सूरज सहि का वैकल्पिक वषिय भी हदि साहित्य ही था। पछिले वर्षों का परणाम देखें तो आप पाएंगे कि लगभग हर वर्ष हदि माध्यम के टॉपर इसी वषिय से होते हैं।

हदि साहित्य के लाभ:

- इसमें अंग्रेज़ी माध्यम से कोई प्रतसिपद्धा ही नहीं है।
- साहित्य के परीक्षकों में प्राय: अपने क्षेत्र के अभ्यर्थियों को अधिक अंक देने की प्रवृत्ति देखी जाती है जिसका लाभ सभी भाषाओं के साहित्यों को साफ तौर पर मलिता है।
- इसमें किसी भी अन्य वषिय की तुलना में अधिक अंक हासलि होते हैं।
- यह छोटा तथा सरिफ़ तीन महीनों में तैयार हो जाने वाला वषिय है और इसके उत्तरों में वर्ष-दर-वर्ष कोई बदलाव करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।
- इसके उत्तर पूरी तरह वस्तुनिष्ठ नहीं होते और उनमें उम्मीदवार की रचनात्मकता की संभावना बनी रहती है। अगर उम्मीदवार को कोई प्रश्न न आता हो तो भी वह अपनी कल्पना से उत्तर लिखकर ठीक-ठाक अंक हासलि कर सकता है।
- इन्ही लाभों का परणाम है कि हदि साहित्य के कमजोर उम्मीदवार भी उतने अंक हासलि कर लेते हैं जतिने लोक-प्रशासन, समाजशास्त्र, राजनीति

वज्जान तथा अर्थशास्त्र जैसे वषियों के अच्छे उम्मीदवार भी नहीं कर पाते ।

- जसि प्रकार हदी साहित्य अत्यंत उपयोगी वषिय है, उसी प्रकार संस्कृत, गुजराती, मराठी, पंजाबी और मैथली आदि भाषाओं के साहित्य भी अत्यंत लाभकारी वषिय हैं । उन्हें भी वे सभी फायदे हासलि हैं जो हदी साहित्य को है । अगर आप इनमें से कसिी भाषा पर अच्छी पकड़ रखते हैं तो आपको बनिा कसिी द्वंद्व के उस वषिय को चुन लेना चाहयि ।

इतहास तथा भूगोल (वैकल्पिक वषिय)

- साहित्य के वषियों के तुरंत बाद हम इतहास तथा भूगोल को स्थान देते हैं ।
- इन वषियों का बड़ा लाभ यह है कइिनकी तैयारी से सामान्य अध्ययन का बड़ा हसिसा अपने आप तैयार हो जाता है ।
- इन दोनों वषियों की बड़ी भूमिका मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन में तो है ही, प्रारंभिक परीक्षा में तो इनके बनिा सफलता की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।
- इन वषियों में 5-7 महीनों का समय तो लगता है कतिु इनमें से लगभग 2-3 महीनों का समय सामान्य अध्ययन में बच भी जाता है ।

दर्शनशास्त्र (वैकल्पिक वषिय)

- यह वषिय छोटा, अवधारणात्मक तथा अंकदायी है । यदि आपकी पृष्ठभूमि इस वषिय की है तो आपको इसे ज़रूर चुनना चाहयि ।
- अगर आपकी पृष्ठभूमि इस वषिय की नहीं है तो यह वषिय तभी लयिा जाना चाहयि जब आप सूक्ष्म अवधारणाओं को समझने में समस्या महसूस न करते हों ।
- इस वषिय से सामान्य अध्ययन में तो मदद नहीं मलिती पर यदि इस पर आपकी गहरी पकड़ है तो आप इसमें लगभग उतने ही अंक ला सकते हैं जतिने हदी साहित्य या साहित्य के अन्य वषियों में मलिते हैं ।
- इस वषिय में अंकों की स्थरिता कम देखी जाती है अर्थात् अगर आपको इस वर्ष 270 अंक मल्लि हैं तो संभव है कवैसी ही तैयारी से अगले वर्ष आपको सरिफ 220 अंक मल्लि । इसलयि यह वषिय उन्हें ही लेना चाहयि जनिकी इसमें गहरी पकड़ हो और वे कठनि से कठनि प्रश्नों से भी आसानी से नपिट सकें ।